RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/280/2015-17
e-paper : www.srushtiagronews.com

मुख्यमंत्री को स्किल डवलपमेंट की गोल्ड ट्रॉफी भेंट

सृष्टि एग्रो

वर्ष -4 अंक-11 जयपुर, 16 से 31 अगस्त 2017 मूल्य - 2 रुपए पाक्षिक पृष्ठ-8

कर्मचारी-अधिकारी सरकार की रीढ़ :राजे

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने कहा कि सुशासन में अधिकारियों व कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कर्मचारी सरकार की रीढ़ हैं और सचिवालय सरकार के हाथ, जिनके माध्यम से हम प्रदेशवासियों के सपनों को पूरा करने का प्रयास करते हैं। राज्य सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं का लाभ आम नागरिकों तक पहुंचाने में कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। श्रीमती राजे राजस्थान सचिवालय कर्मचारी संघ द्वारा सचिवालय परिसर में आयोजित स्वाधीनता समारोह को सम्बोधित कर रही थीं। इससे पहले मुख्यमंत्री ने परिसर में मौजूद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए और ध्वजारोहण किया। कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना सरकार का कर्तव्य है। कर्मचारियों की जायज मांगों के लिए सरकार हमेशा उनके साथ है। टीम राजस्थान की अथक मेहनत का परिणाम है कि सरकार के प्रत्येक विभाग के कार्यों की राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना की गई है। अधिकारी-कर्मचारी पूर्ण संवेदनशीलता के साथ लोगों की समस्याओं का समाधान करें। समिति के अध्ययन के बाद सातवें वेतन आयोग की रिपोर्ट को जल्द ही लागू करने का प्रयास किया जाएगा। राज्य सरकार ने पहली बार अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक कर्मचारियों को अनुभव में पूरी छूट देते हुए राजपत्रित पदों पर पदोन्नतियां दी हैं। प्रोबेशनर्स के नियत वेतनमान में सितम्बर 2014 से 20 प्रतिशत तथा जुलाई 2015 से अतिरिक्त 10 प्रतिशत वृद्धि की गई। एक जनवरी 2004 तथा उसके बाद नियुक्त राज्यकर्मियों के लिए मेडिक्लेम पॉलिसी की सीमा 2 से बढ़ाकर 3 लाख रुपए जबकि राज्यकर्मियों के समूह व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा के तहत देय राशि 2 लाख से बढ़ाकर 3 लाख रुपए कर दी गई है।

मंडी श्रमिक करा सकेंगे निजी अस्पतालों में इलाज:सैनी

जयपुर (कासं)। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने बताया कि मंडियों में पंजीकृत अनुज्ञापत्रधारी हमाल, पल्लेदार, तुलाईकादारों का अब गंभीर बीमारी होने पर सरकारी कर्मचारियों की भांति कर्मचारियों के लिए अधिकृत निजी अस्पतालों में इलाज करवाए जाने पर चिकित्सा पुनर्भरण हो सकेगा। सैनी ने बताया कि मंडी में काम करने वाले अनुज्ञापत्रधारी हमाल, पल्लेदार व तुलाईकारों को महात्मा ज्योतिबा फुले मंडी श्रमिक कल्याण योजना 2015 के अन्तर्गत गंभीर बीमारी होने पर 20 हजार रुपये की सीमा तक राशि का पुनर्भरण का प्रावधान है।

उन्होंने बताया कि पहले यह पुनर्भरण केवल सरकारी अस्पतालों में इलाज करवाए जाने पर ही होता था, लेकिन अब सरकारी अस्पताल के साथ-साथ सरकारी कर्मचारी की तरह उनके लिए अधिकृत निजी अस्पतालों में इजाज करवाए जाने पर भी पुनर्भरण हो सकेगा। कृषि मंत्री सैनी ने बताया कि कृषि उपज मंडी समिति सुमेरपुर में काम करने वाले हमाल सवाराम के कैंसर हो गया था। सवाराम ने राजस्थान मेडिकल सोसायटी एण्ड रिसर्च सेन्टर, भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल, सुमेरपुर मे इलाज करवा लिया। महात्मा ज्योतिबा फुले मंडी श्रमिक कल्याण योजना 2015 के अन्तर्गत केवल सरकारी अस्पतालों में इलाज करवाने पर ही इलाज में लगी राशि का पुनर्भरण का प्रावधान था और यह अस्पताल निजी था, इसलिए पीड़ित के चिकित्सा व्यय का पुनर्भरण नहीं हो पा रहा था। इस पीड़ित को राहत देने के लिए इस योजना के प्रावधानों में बदलाव किया गया और नीतिगत निर्णय लेते हुए इस पीड़ित की राशि का पुनर्भरण करने का निर्णय लिया गया।

राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्यमंत्री ने किया ध्वजारोहण

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने खचाखच भरे एसएमएस स्टेडियम में आयोजित राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण किया। श्रीमती राजे ने सहायक पुलिस अधीक्षक, भरतपुर ग्रामीण धर्मेन्द्र सिंह के नेतृत्व में परेड का निरीक्षण कर मार्चपास्ट की सलामी ली। परेड में गुजरात पुलिस प्लाटून सहित विभिन्न पुलिस बलों, आरएसी, एनसीसी (आर्मी बॉयज, आर्मी गर्ल्स, एयर विंग), स्काउट-गाइड, होमगार्ड एवं एमजीडी गर्ल्स स्कूल की टुकड़ी ने भाग लिया।

पुलिस के जवानों ने दी हैरतअंगेज करतबों की प्रस्तुत: आर्मी बैण्ड, सेंट्रल पुलिस बैण्ड, एमजीडी स्कूल बैंड और सेंट जेवियर स्कूल बैंड की ओर से आकर्षक बैण्डवादन की प्रस्तुति दी गई। राजस्थान पुलिस जवानों ने मोटरसाइकिल पर हैरतअंगेज करतबों का प्रदर्शन कर खूब तालियां बटोरीं।

सम्पादकीय

जीएम सरसों पर नई हलचल

जीएम खाद्य फसलों को लेकर हाल के वर्षों में चले भारी विरोध और समर्थन के बीच फिर से एक नयी हलचल आरंभ हो गई है। भारत सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में सूचित किया कि वह डेढ़ महीने के भीतर जीएम सरसों के व्यावसायिक खेती के लिए अनुमति देने के बारे में फैसला लेगा। फैसला जीएम सरसों के पक्ष में होगा तो सुप्रीम कोर्ट इस पर सुनवाई करेगा। बीते साल जीएम सरसों के व्यावसायिक उपयोग पर अगले आदेश तक सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी थी। सरसों की बुआई अक्टूबर महीने में आरंभ होती है लिहाजा सरकार इस मसले के पक्ष में भी फैसला लेती है तो इस साल इसे जमीन पर उतार पाना आसान नहीं होगा। इसके भारी विरोध की भी आशंका है। हालांकि जीएम सरसों को लेकर बीते कई वर्षों से भारत के तमाम दिग्गज कृषि वैज्ञानिक पैरोकारी कर रहे हैं। दावा है कि जीएम सरसों की पैदावार 20 से 25 फीसदी अधिक बढ़ जाएगी और तेल की गुणवत्ता बेहतर होगी। सालाना हमारे 60 हज़ार करोड़ रुपए के खाद्य तेल के आयात में इससे कमी आएगी लेकिन यह बात ध्यान रखने की है कि सरसों से हमारा तिलहन संकट नहीं समाप्त होगा। भारत विश्व के तिलहन उत्पादन में करीब 10 फीसदी का योगदान देता है। हमारे यहां एक जनवरी, 2013 से आयात के साथ ही घरेलू कंपनियों द्वारा पैक या फिर तैयार किए गए सभी तरह के जीएम फूड के पैकेटों खाद्य पदार्थ की पूरी जानकारी देना अनिवार्य हो गया है। फिर भी विदेशों से आयातित कई जीएम खाद्य पदार्थ बिक रहे हैं। हमारा अधिकतर तिलहन उत्पादन वर्षा सिंचित इलाकों में होता है। वाजिब दाम न मिलना और कीट व्याधियों जैसे तमाम कारणों से सिंचित इलाकों में तिलहनी फसलों के प्रति किसानों में खास उत्साह नहीं रहता है। देश की प्रमुख तिलहनी फसलों में सरसों, मूंगफली, तिल, सोयाबीन, सूरजमुखी, कुसुम, रामतिल, अरंड और अलसी आती हैं। सरसों कुल खाद्य तेलों में 28.6 फीसदी का योगदान करता है। हमारी खाद्य तेलों की घरेलू खपत 190 लाख टन के करीब है जिसका 50 से 60 फीसदी हिस्सा आयात से पूरा होता है लेकिन आयातित खाद्य तेलों में पाम ऑयल सबसे प्रमुख है, सरसों नहीं। यह सही है कि उत्तर भारत में तिलहनी फसलों में सरसों खास है जिसकी विश्व उत्पादकता 1950 किग्रा प्रति हेक्टेयर है, जबकि भारत में 1185 किग्रा है। 2014-15 से सरकार ने देश में तिलहन उत्पादकता बढ़ाने को राष्ट्रीय तिलहन और ऑयल पाम मिशन भी आरंभ किया है और कई दूसरे कदम भी उठाए हैं। जीएम खाद्य फसलों को लेकर गंभीर विवाद यूपीए-2 शासन के आखिरी दौर में आरंभ हुआ। तब तमाम विवादों के बावजूद उन 10 खाद्य फसलों गेहूं, धान, कपास, ज्वार, बाजरा और मक्का आदि के परीक्षण की मंजूरी दे दी गई जिस पर 2010 में तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्री जयराम रमेश ने रोक लगाई थी। बाद में वीरप्पा मोइली ने अलग लाइन ले ली लेकिन विरोध के नाते आगे रफ्तार धीमी रही। हालांकि 2013 के आरंभ में ही तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस को संबोधित करते हुए इसकी वकालत की और कहा था कि जीएम फसलों पर अवैज्ञानिक पूर्वाग्रहों के सामने सरकार अब और झुक नहीं सकती। हालांकि इस मसले पर 2010 में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने बीटी बैंगन की पैरवी करते हुए ठोस नीति की वकालत की थी। परिषद ने बीटी फसलों और इसके पर्यावरण और खाद्य सुरक्षा से जुड़े मसले को लेकर एक नियामक ढांचा बनाने की बात कही थी ताकि परिणामों को कम से कम समय में सार्वजनिक किया जा सके। भारत में जीएम फसलों का नियमन केंद्रीय पर्यावरण और वन मंत्रालय के हाथ है लेकिन 2011 में जीएम फसलों की प्रायोगिक खेती के बारे में राज्य सरकारों की अनुमति लेना अनिवार्य होने के बाद तस्वीर बदल चुकी है। भारत में एकमात्र जीएम फसल बीटी कपास है, जिसे 2002 में अनुमति दी गई। इसकी खेती 10 राज्यों में हो रही है। इस समय देश में 1462 कपास संकर के बीजों के वितरण का काम 61 बीज कंपनियां कर रही हैं। कपास की उत्पादकता 2002-03 में 191 किग्रा प्रति हेक्टेयर से बढ़ कर 2016-17 में 513 किग्रा प्रति हेक्टेयर हो गई है। कपास उत्पादन भी इसी अवधि में 82.21 लाख गांठ से बढ़ कर 325.76 लाख गांठ तक पहुंच गई है। आज 80 फीसदी से अधिक कपास क्षेत्र में बीटी कपास उगाया जा रहा है लेकिन इसका सबसे अधिक फायदा बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियां उठा रही हैं। अकेले मोनसेंटो ने 2008 तक केवल रायल्टी से 10,000 करोड़ रु की कमाई की। मोनसेंटो और महिको यहां 1996 से बीटी कपास के विकास में लगी थी। कपास में ऐसा जीन प्रतिरोपित किया गया जिसमें कीट प्रकोप को रोकने की क्षमता थी। 2002 में 450 ग्राम के 1.05 लाख पैकेट बीटी कपास से एक नयी क्रांति की शुरुआत हुई। भले ही बीटी कपास अखाद्य फसल थी लेकिन इसे लेकर भी कई आशंकाएं थीं। विरोधियों का तर्क था कि यह भारत जैसी उष्ण कटिबंधीय जलवायु लायक नहीं है लेकिन पैरोकारों का दावा था कि इससे बालवार्म से निजात मिलेगी और यह सफेद सोना साबित होगी। बीटी बीज सामान्य बीजों से 200 गुना तक महंगे थे। महिको-मोनसेंटो ने 450 ग्राम के बीज का एक पैकेट 1800 रुपए में बेचना आरंभ किया तो मसला एमआरटीपी तक पहुंचा। बाद में दाम 750 से 925 रुपए के बीच आया। अभी भी तमाम इलाकों में मनमाने दरों पर बीज बिक रहे हैं। फिर भी बीटी कपास को सफलता की बड़ी कहानी माना जाता है जिसके नाते भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कपास निर्यातक बना। हम दुनिया की 22 फीसदी कपास पैदा कर रहे हैं। बीटी कपास ने एकाधिकार जमाते हुए हमारी कपास की सैकड़ों परंपरागत देशी प्रजातियां समाप्त कर दी। बीटी कपास के आने के पहले हमारे कृषि वैज्ञानिकों ने 250 किस्में विकसित की थीं वो भी लापता हो गई। बीटी कपास के नकली बीजों ने भी कई जगहों पर किसानों को बर्बाद किया। कपास इलाकों में किसानों की आत्महत्याएं और कर्ज के दलदल में फंसने की कहानियां अलग हैं। इसी नाते बीटी जींस के परीक्षण का काम केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर को सौंपा गया।

नवजात बछड़ों के लिये खीस (कोलोस्ट्रम) का महत्व

डेयरी उद्योग की सफलता उचित बछड़ा व बछड़ी प्रबंधन पर निर्भर करती है। युवा वंश का उचित प्रबंधन मृत्युदर को कम कर सकता है। इसमें खीस का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

खीस क्या है- खीस एक गाढ़ा, पीला और मैमेरी ग्लैण्ड का प्रथम स्राव है, जो कि प्रजनन के तुरन्त बाद प्राप्त होता है। यह एक सामान्य दूध की तुलना में 4-5 गुना अधिक प्रोटीन और 10-15 गुना अधिक विटामिन-ए रखता है। यह कई प्रतिरक्षी, वृद्धि कारकों और आवश्यक पोषक तत्वों के साथ ट्रिप्सिन जैसे अवरोधक कारक भी रखता है। ये अवरोधक कारक खीस में उपस्थित एंटी बॉडी को बच्चे की आंत में होने वाले पाचन को रोकते है और एंटी बॉडी को बिना विघटित हुए सीधे ज्यों का त्यों अवशोषित कर लेती है।

खीस क्यों पिलाना चाहिए

-खीस एंटी बॉडी का प्राथमिक स्रोत है तथा इसमें एंटी बॉडी पर्याप्त मात्रा में रहती है।

-खीस में एन्जाइम अवरोधक होते है जो कि एंटी बॉडी को आंत में विघटित होने से बचाते हैं। जिससे ये ज्यों के त्यों अवशोषित हो जाते हैं।

-खीस बछड़ों में डायरिया तथा न्यूमोनिया के जोखिम को कम करते हैं।

-खीस वसा, प्रोटीन, विटामिन्स तथा खनिज का केंद्रित स्रोत होता है।

-खीस में अनेक हार्मोन व विकास कारक होते हैं जो कि बछड़े के वृद्धि व स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण है।

खीस बछड़े को कब देना चाहिए

जन्म के बाद पहले घंटे के भीतर जितना जल्दी हो सके बछड़े को पिला देना चाहिए। क्योंकि नवजात बछड़े की आंतों में उसके जन्म के 24 घंटों तक प्रोटीन के बड़े अणुओं को अवशोषित करने की क्षमता रहती है।

कितनी मात्रा में पिलायें खीस

जन्म के पहले 6 घंटों में लगभग 2.5-3. लीटर या बछड़े के भार के 10 प्रतिशत के बराबर खीस पिला देना चाहिए।

खीस की गुणवत्ता की जांच कैसे करें

-अच्छी गुणवत्ता के खीस में न्यूनतम 50 ग्रा. इम्युनोग्लोबुलिन (द्रव्य) प्रति लीटर पाया जाता है।

-इसका गुणात्मक अनुमान कोलोस्ट्रोमीटर द्वारा किया जाता है।

खीस की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारक

गाय की आयु- प्राय: बूढ़ी गायों में खीस, अधिक मात्रा में अच्छी क्वालिटी का पाया जाता है। तीन या अधिक ब्यात (लेक्टिन) वाली गायों में खीस सामान्यता अच्छी क्वालिटी का होता है।

सूखे की अवधि-तीन सप्ताह से कम सूखे अवधि में इम्युनोग्लोबुलिन (द्रव्य) मोरी ग्लेड में इकट्ठा नहीं हो पाता है। इसलिये सूखी अवधि लंबी (3 सप्ताह से अधिक) होने पर बेहतर खीस प्राप्त होता है।

टीकाकरण- रोटा वायरस ई. कोली तथा बी.वी.डी. से टीकाकृत गायों के खीस में इम्युनोग्लोबुलिन (द्रव्य) अधिक पाया जाता है।

नस्ल- प्राय: अधिक दूध देने वाली गायों में खीस की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती है। देशी गायों में संकर या विदेशी गायों की तुलना में बेहतर खीस पाया गया है।

खीस का भंडारण

1. अधिक क्वालिटी के खीस को ही भंडारित करें।

2. खीस को फ्रीज में एक सप्ताह तक भंडारित भी कर सकते है तथा डीप फ्रीज में करीबन एक साल तक भंडारित किया जा सकता है।

3. इस बात का ध्यान रखा जाए कि भंडारित खीस को पिघलाते समय 50 डिग्री सेंटीग्रेड से ज्यादा तापमान न हो, अन्यथा इम्युनोग्लोबुलिन द्रव्य (प्रोटीन) नष्ट हो सकते हैं।

कृत्रिम खीस: कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी कारणवश माँ, बच्चे ब्याने के पश्चात खीस देती ही नहीं है या गाय की मृत्यु हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में अगर कोई और गाय आसपास में ब्याई हो तो उसका खीस पिलाया जा सकता है। अन्यथा बच्चे को कृत्रिम खीस (ताजा दूध-500 मिली., एक अंडा 55-60 ग्रा., गुनगुना पानी-300 मिली तथा अरंडी का तेल-1-2 चम्मच) घर पर बनाकर पिलाना चाहिए। कृत्रिम खीस दिन में तीन बार पिलाना चाहिए। इस प्रकार बछड़ों का ऊपर बताई गई खीस प्रबंधन विधि को ध्यान में रखकर किसान भाई न केवल युवा वंश (बछड़ा व बछड़ी) की मृत्युदर को कम कर सकते हैं बल्कि भविष्य में होने वाले आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं तथा एक बेहतर उत्पादन वाले डेयरी झुण्ड तैयार कर सकते है।

पशु स्वास्थ्य परीक्षण एवं सावधानियां

किसी भी पशु का स्वास्थ्य जांचने हेतु स्वस्थ पशु के लक्षण जानना आवश्यक है। स्वस्थ पशु के लक्षण निम्नानुसार हैं।

1. शरीर का तापक्रम सामान्य होना।
2. शरीर का चमकदार होना।
3. सामान्य रूप से जुगाली करना।
4. मजल का गीला होना।
5. वातावरण के प्रति सजग होना।
6. कान का सीधा रहना।
7. भोजन सामान्य रूप से ग्रहण करना।

अस्वस्थ पशु के लक्षण

1. शरीर का तापक्रम असामान्य होना।
2. शरीर की खाल का खुरदुरा होना।
3. झुण्ड से अलग रहना।
4. जुगाली का न करना।
5. वतावरण के प्रति असहज होना।
6. मजल का सूखा होना।
7. कान का लटका हुआ होना।
8. भोजन सामान्य रूप से न ग्रहण करना।

परन्तु किसी भी पशु के स्वास्थ्य के परीक्षण हेतु सर्वप्रथम पशु का तापक्रम लेना आवश्यक है। बढ़ा या घटा हुआ तापक्रम पशु के बीमार होने का सूचक होता है ।

सामान्य तापक्रम सेन्टीग्रेड

दुधारू गाय- 380 से 393 डिग्री से.ग्रे.
भैंस- 375 से 390 डिग्री से.ग्रे.
बकरी- 385 से 347 डिग्री से.ग्रे.

मौसम का प्रभाव: अत्यधिक गर्मी, शीत या बरसात पशु के शरीर को प्रभावित कर उसे बीमार कर सकते हैं। गर्म हवाओं से लू लगना, शीत प्रकोप से सर्दी, कफ, निमोनियां का होना व बरसात के कारण विभिन्न जीवाणु या विषाणु जनित बीमारियों का होना सर्दी खांसी का होना पशु में पाया जाता है।

थकावट के कारण: लम्बे समय तक विपरीत मौसम का प्रभाव, लंबी दूरी की यात्रा, किसी बीमारी का प्रभाव, टीकाकरण इत्यादि से होने वाली थकावट पशु की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर अन्य बीमारियों के फैलने में मदद करती है। गलघोंटू जैसी बीमारी एवं पक्षियों में कोराइजा, आई.बी.डी. जैसी बीमारियां इसी कारण से होती है।

भोजन का प्रभाव: दूषित भोजन या अल्प भोजन दोनों नुकसानदायक हैं। अल्प भोजन पेट में अम्लता विकसित करता है एवं दूषित भोजन से पशु में अफरा, ब्लोट जैसी शिकायतें पैदा करता है। विषाक्त भोजन से पशु में जहरवात का प्रकोप होता है एवं कभी-कभी पशु की मृत्यु भी हो जाती है। यूरिया एवं हाइड्रोसायनिक अम्ल प्वायजनिंग इसका उदाहरण हैं।

बाह्य आघात के कारण: पशु बाहय आघात जैसे किसी भारी वस्तु से टक्कर होना, डंडे से पीटा जाना, गड्ढे में गिरना या आपस में लडना इत्यादि कारणों से अस्वस्थ हो सकते हैं। चोट के कारण अंदरूनी घाव हो सकते है एवं हार्निया भी विकसित हो सकता है। बाहय स्वरूप में विकृति हो सकती है तथा फैक्चर भी हो सकता है। अत: सावधानी पूर्वक परीक्षण की आवश्यकता होती है।

अन्य कारण: पशु के अस्वस्थ होने में अग्नि का प्रभाव, करंट लगना, प्राकृतिक तड़ित का प्रकोप होना या सांप, बिच्छू इत्यादि के जहर का प्रभाव होना शामिल है। इसके अलावा दवाओं का अत्यधिक प्रयोग भी लीवर एवं गुर्दे में असर डालता है।

पशुओं का पौष्टिक आहार एजोला

राजेश कुमार मीना, वर्तमान में कार्यरत तकनीकी सहायक राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा जयपुर, (एस.के.एन.ए.यू. जोबनेर)

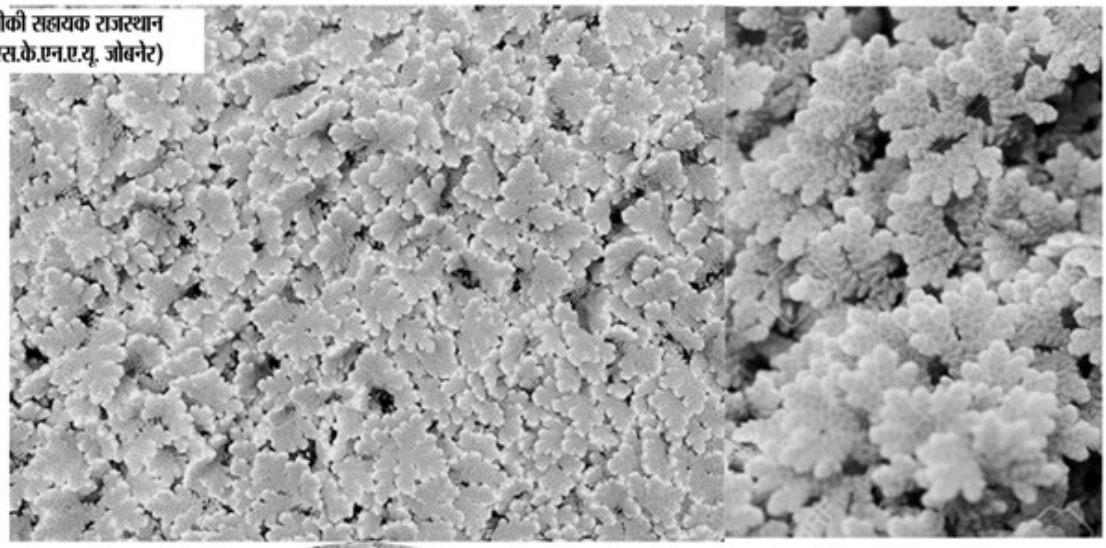

परिचय: अजोला पानी में पनपने वाला छोटे बारिक पौधा की जाति का होता है जिसे वैज्ञानिक मात्रा में वाटर फर्न कहा जाता है। एजोला की पंखुड़िया में एनाबिन नामक नील हरित नामक जाति का एक सुक्ष्म जीव होता है जो कि सूर्य के प्रकाश में वायुमण्डलीय नत्रजन का यौगिकीकरण करता है जो सूर्य के प्रकाश में वायुमण्डलीय नत्रजन की पूर्ति करता है। अजोला की विशेषता है कि यह अनुकुल वातावरण में 5 दिनों में 2 गुना हो जाता है यदि इसे पूरे वर्ष बढ़ने दिया जाए तो 300 टन से भी अधिक केन्द्रीय पदार्थ प्रति हैक्टर प्राप्त किया जा सकता है।

अजोला में 3.5 प्रतिशत नत्रजन व कई तरह के कार्बनिक पदार्थ होते हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं। अजोला दूध देने वाले जानवरों के लिए उत्तम फीड सल्फीमेन्ट है और कम जगह, कम समय व कष्ट में बहुत उत्पादन देने वाली पौध है इसकी वजह है पशु पालकों को यह सस्ता और अच्छा फीड सल्फीमेन्ट है।

एजोला की प्रजाति- छः प्रजाति है।
अजोला कैरोलिना
अजोला निलटिका
अजोला फिलिक्यूलाइट
अजोला मेसिकना
अजोला माइक्रोरेफिला
अजोला पिन्नाटा

इसमें भारत में अजोला पिन्नाटा पाया जाता है।

अजोला एक पशु आहार:

▶ अजोला में प्रोटीन व आवश्यक एमिनों औसिडस विटामिन ए, बी-12 और बिटोकेरोटिन व शरीर बढ़ने के लिए उपर्युक्त खनिज लवण जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, पोटेशियम, लोहा, कॉपर, मैग्नीशियम से परिपूर्ण अच्छा स्त्रोत है।

▶ अजोला में प्रोटीन मात्रा 25-35प्रश. मिनरल खजिन लवण 10-15 प्रतिशत, वसा - 3.55 प्रतिश्त रेसा-15 प्रतिशत (फाईबर) एन.एफ.ई. 46 प्रतिशत।

▶ अजोला में उच्च प्रोटिन और कम लिनिंग मात्रा होने के बावजूद यह आसानी से पशुओं में पच जाता है।

▶ अजोला गाय, भैंस, भेड़ बकरी, सूअर, खरगोश व मुर्गी पालकों के लिए कम खर्चे में आने वाला फिड सल्फीमेन्ट हैं।

अजोला बनने की विधि -2'2'0.2 मीटर (लम्बाई×चौडाई × गहराई) का गड्ढा छायदार, जगह होना चाहिए। किन्तु इसे सुबह की धूप भी मिलनी चाहिए। गड्ढे में प्लास्टिक लम्बी और चौड़ी शीट बिछाए।

▶ गड्ढे में 10-15 किलोग्राम खेत में बारिक अच्छी मिटटी डाले।

▶ गड्ढे में 2 किग्रा ताजा गोबर और 30 ग्राम सुपर फास्फेट डालने के बाद 10 लीटर पानी डाले और अच्छे से मिलावे।

▶ गड्ढे को 15 सेमी. पानी भर देवे। इसमें 1 किलो अजोला कल्चर डाले जो कि 10-15 दिन गड्ढे में पूरी तरह फैल जाएगा। इसके बाद छलनी से 600-700 ग्राम अजोला को आप प्रतिदिन निकालकर अपने पशु को खिलाने से पहले अजोला को अच्छी तरह से ताजा पानी से धो ले ताकि गोबर की बास निकल जाए।

अजोला बढ़ाने के लिए आवश्यक चीजे -

तापमान: 200 सेंटीग्रेड से 280 सेटीग्रेड प्रकाश-50 प्रतिशत सूर्यप्रकाश- अगर तापमन 300 सेटीग्रेड से ऊपर जाता है तो अजोला की बढ़वार नहीं होती है और ईल्ली पड़ जाती है तो धूपकाल में उससे बचने के लिए ग्रीन शेड नेट का इस्तेमाल करे जिसे तापमान 50 सेटीग्रेड 90 सेटीग्रेड कम कर सकते हैं।

वाष्पीकरण कम करने मदद होती है और अजोला की बढ़वार अच्छी होती है।

फास्फोरस युक्त खाद- अजोला जल्दी से बढ़ने के लिए फास्फोरस अति आवश्यक है।

▶ 1 किग्रा गोबर 20 ग्राम सुपर फास्फेट हर 5-7 दिन के अन्तराज में गड्ढें में डाले।

▶ 5 किग्रा मिट्टी हर 30 दिन बाद बदलना चाहिये और 25-30 प्रतिशत पानी हर 10 दिन में बदलना चाहिए।

अजोला के फायदे: अजोला आसानी से पशुओं में पचता है। इससे 10-15 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है।

▶अजोला में मौजूद महत्वपूर्ण पोषक मूल्यों से यह पशुओं के लिए एक फीड सल्फीमेन्ट का काम करता है।

▶ दुधारू पशुओं में अजोला खिलाने से दूध की पोषक मूल्यों में वृद्धि होती है।

▶ अजोला मांस वाली मुर्गियों में वजन बढ़ाती है अण्डों वाली मुर्गियों में अण्डों में वृद्धि होती हैं।

▶ पशु शाश्वत आहार के रूप में अजोला गाय, भैंस, बकरी, भेड़ खरगोश व मुर्गीपालन में फीड सल्फीमेन्ट का कार्य करती है।

▶गड्ढे की 6 महीने पुरानी 2 किलो मिट्टी 1 किलों एन.पी.के. खाद इतनी पोषक होती है।

▶1 हैक्टर खेत में 40-60 किलो अजोला खद इस्तेमाल करने पर पौधें के उत्पादन में 5 प्रतिशत तक वृद्धि होती है। अजोला कैचुंआ खाद निर्माण में भी कैचुंआ को खिलाने में इस्तेमाल होता है।

फड़का कातरा ने बढ़ाई किसानों की चिंता, फसलों पर होने लगा असर

जयपुर (कासं)। अच्छी बारिश के मौसम में फसलों में फड़का और कातरा का प्रकोप शुरू होने से किसानों की चिंताएं बढ़नी लगी हैं। किसानों को अच्छी फसल की उम्मीद थी लेकिन ये दोनों कीटों ने किसानों की उम्मीदों पर पानी फेरना शुरू कर दिया है। ये दोनों कीट हरी पत्तियों को चट कर जाते हैं। इससे फसल में उत्पादन उत्पादकता दोनों पर प्रभाव पड़ता है। कृषि विभाग के क्षेत्रीय अधिकारी इस पर नजर रखे हुए हैं। अभी ज्यादा नुकसान वाली स्थिति नहीं है, फिर भी किसानों को सावचेत रहकर इनका समाधान करना चाहिए। फड़का कातरा दोनों को ही नियंत्रण करने के लिए रासायनिक देसी उपाय मौजूद हैं। कृषि विभाग में संयुक्त निदेशक (आदान) डॉ. रामगोपाल शर्मा का कहना है कि क्यूनॉलफोस के चूर्ण का भुरकाव करने से इनसे छुटकारा पाया जा सकता है।

किसानों का दुश्मन रामजी का घोड़ा (फड़का)

मूल रूप से टिड्डी के परिवार से माना जाने वाला फड़का हरे रंग का होता है। कई बार इसकी लंबाई 5-6 सेंटीमीटर तक होती है। गांवों में इसे रामजी का घोड़ा के नाम से भी जानते हैं। यह कई पौधों को एक साथ निशाना बनाता है। इसका अधिक प्रभाव अरावली क्षेत्र के अजमेर से उदयपुर-बांसवाड़ा तक और निकटवर्ती पाली, सिरोही कुछ हद तक नागौर में देखने में आता है। इनके मेल फीमेल की मेटिंग के बाद फीमेल खेत की मेड़ या पोली जमीन में दो से ढाई इंच गहराई में गड्ढे करके अंडे देती है। ये अंडे 6-7 माह तक उसी सुसुप्त अवस्था में रहते हैं। बारिश होते ही ये जौ के दाने के आकार में बाहर आते हैं। पहले मेड़ पर लगी घास चट करते हैं, फिर खेत में उसी फसल को निशाना बनाते है।

रोकथाम के उपाय:

➥मेड़ के पास शाम को कचरे में आग लगा दें, इससे फड़का इसमें गिर स्वत: खत्म हो जाए। फड़का आग में गिरने का आदी है।

➥खेत की मेड़ को साफ-सुथरा रखें ताकि मादा फड़का अंडे दे पाए।

➥डोल या मेड़ पर बुआई से पहले मिट्टी डाल दें ताकि अंडे ऊपर नहीं आएं।

➥गर्मी के दौरान खेत में इतनी जुताई कर दें कि पोली जमीन में पड़े अंडे ऊपर आकर खत्म हो जाएं।

फसलों का दुश्मन कातरा

शहतूत के आकार की इस लट के शरीर पर रोछ के माफिक बाल होते हैं, इसलिए इस पर सीधे तौर पर दवा असर नहीं करती। मेटिंग के बाद इसकी मादा अंडे देती है। एक-एक तितली एक-एक हजार अंडे देती है और जीवनचक्र बढ़ता रहता है। इसके अंडे से लार्वा निकलता है। लार्वा से प्यूपा बनता है। प्यूपा से वयस्क होते ही ये फसल को प्रभावित करता है। प्यूपा तक तो ये सुसुप्त अवस्था में रहता है। बारिश होते ही ये वयस्क होकर तितली के रूप में प्रभाव दिखाता है। ये सेना की तरह समूह कतार में चलते हैं। पौधे पर चढ़कर पत्तों तनों को खाते चलते हैं। इनको भी क्यूनॉलफोस के भुरकाव से नियंत्रित किया जा सकता है।

रोकने के देसी उपाय: खेत के चारों ओर एक फीट गहरी एक फीट चौड़ी खाई खोदकर उसमें क्यूनॉलफोस का चूर्ण भुरकाव कर दिया जाए। इससे मेड़ से निकलते ही लार्वा या प्यूपा इसमें गिरेंगे और खत्म हो जाएंगे। खेत में पत्तों भूमि दोनों पर क्यूनॉलफोस का भुरकाव किया जाए, जिससे चलते समय ये इस दवा के संपर्क में आएंगे और खत्म हो जाएंगे।

स्वच्छता एवं ओडीएफ में युवाओं की महत्ती भमिका :कृषि मंत्री

जयपुर (कासं)। कृषि, पशुपालन मंत्री एवं कोटा जिला प्रभारी मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि स्वच्छता अभियान में युवाओं की भागीदारी से ही परिवर्तन संभव है। स्वच्छता, स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखकर गांव-गांव में संदेश पहुंचाना होगा। कृषि मंत्री कोटा जिले की ओडीएफ ग्राम पंचायतों से चयनितों से रूबरू होते हुए राजकीय वोकेशनल स्कूल में आयोजित जिला स्तरीय ऑलम्पियाड प्रतियोगिता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गांवों को खुले में शौचमुक्त बनाने का जश्न स्वतंत्रता के जश्न के साथ मनाया जाये, इसके लिए सरकार द्वारा स्वच्छता

सप्ताह का आयोजन किया गया था। गांवों को स्वच्छ व ओडीएफ बनाने में युवाओं की महती भूमिका है। खेलों के द्वारा जिस प्रकार शरीर स्वस्थ रहता है उसकी प्रकार ओडीएफ होने से गांव बीमारियों से मुक्त होंगे। उन्होंने जिले में ओडीएफ ग्राम पंचायतों के मध्य कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित कर जिला स्तर पर ऑलम्पियाड का आयोजन किये जाने पर जिला प्रशासन की सराहना की।

कोटा जिला प्रभारी मंत्री ने जिले की पांचों पंचायत समितियों का प्रतिनिधित्व करने वाली टीम के खिलाडियों से परिचय प्राप्त किया तथा मैच शुरू कर उत्साहवर्धन किया।

अब शेखावाटी में भी होने लगी औषधीय पौधे मोरिंगा की खेती

सीकर (विसं)। प्रदेश के रेतीले धोरे एवं शुष्क जलवायु में महाराष्ट्र के सिंदूरी अनार के बाद अब औषधीय प्लांट मोरिंगा (सैजना) की खेती भी कारगर साबित हो रही है। शुरुआत सीकर जिले के पुरा की ढाणी निवासी किसान धर्मपाल चौधरी ने की है। बुआई के महज 5 माह बाद ही मोरिंगा का उत्पादन शुरू हो गया है। चौधरी ने बताया कि उसने मोरिंगा की खेती की शुरुआत आधा हैक्टेयर से की थी। फरवरी में 1100 पौधे लगाए। प्रति सीड्स की लागत 5 रुपए आई। आधा हैक्टेयर में 5 हजार रुपए का बीज और 5000 बुआई खर्चा हुआ। सिंचाई भी माह में दो बार ही करने की जरूरत है। ऐसे में कम पानी एवं रेतीले धोरों में भी यह खेती अच्छी कारगर हो रही है।

खेतीकी उपयोगिता को देख उद्यान विभाग ने शुरू किया अनुदान: खास बात यह है कि मोरिंगा को पर्यावरण के लिए अनुकूल एवं किसानों की अच्छी आय का जरिया माना गया है। मोरिंगा की खेती की उपयोगिता को देखते हुए उद्यान विभाग ने इस पर अनुदान की स्वीकृति भी जारी कर दी है। किसानों को अन्य बागवानी फसलों की तर्ज पर मोरिंगा की खेती पर भी अब अनुदान मिलेगा। कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि मोरिंगा के लिए शेखावाटी सहित प्रदेशभर की जलवायु अनुकूल है। ऐसे में प्रदेश के किसान बड़े स्तर पर मोरिंगा की खेती कर सकते हैं।

बंजर भूमि को भी बना सकते हैं आमदनी का जरिया: मोरिंगा की खेती बंजर भूमि में भी कारगर साबित हो रही है, क्योंकि इसे ज्यादा सिंचाई की जरूरत नहीं होती। वहीं दीमक कीट भी नहीं लगता। एक पौधे से किसान साल में दो बार पैदावार ले सकता है। बुआई किसी भी माह में की जा सकती है।

सालमें दो बार पैदावार, बड़ी कंपनी कर रही अनुबंध: मोरिंगा की खेती को बढ़ावा देने के मकसद से औषधीय क्षेत्र में काम कर रही कई कंपनियां आगे आने लगी हैं। ये कंपनियां किसानों को बुआई के प्रथम 6 माह में ही प्रति प्लांट तय मुनाफा देकर खरीदने का अनुबंध कर रही हैं।

ऑर्गेनिक वेस्ट से खाद बनाने वाली पौलेण्ड की कम्पनी के प्रतिनिधि मण्डल ने महापौर से मुलाकात की

जयपुर (कासं)। नगर निगम मुख्यालय में महापौर डॉ. अशोक लाहोटी ने पौलेण्ड की एक्स्ट्रा टेरा कम्पनी के एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ बैठक की। डॉ. लाहोटी ने बताया कि इस कम्पनी के पास एक ऐसी पेटेन्ट टेक्नोलोजी है जो 45 मिनट में ऑर्गेनिक वेस्ट को खाद में बदल सकती है। प्रतिनिधि मण्डल ने इस तकनीक के बारे में प्रजेन्टेशन दिया। इस तकनीक से जयपुर की एक बड़ी समस्या हल हो सकती है और ऑर्गेनिक वेस्ट जैसे इंसानी मल, जानवरों का मल, वेस्ट फूड और वेजिटेबल से उच्च गुणवत्ता की खाद प्राप्त हो सकती है। उन्होंने प्रतिनिधि मण्डल से इस तकनीक के बारे में विस्तार से चर्चा कर प्रस्ताव प्रस्तुत करने को कहा।

अलवर की बहाला ग्राम सेवा सहकारी समिति को मिला राष्ट्रीय अवार्ड

जयपुर (कासं)। अपेक्स बैंक के प्रबंध निदेशक विद्याधर गोदारा ने बताया कि अलवर जिले की बहाला ग्राम सेवा सहकारी समिति को नैफस्कॉब की ओर से राष्ट्रीय सुभाष यादव अवार्ड के लिए प्रथम स्थान पर चयनित किया गया था और आज चैन्नई में आयोजित राष्ट्रीय समारोह में तमिलनाडु के सहकारिता मंत्री ने समिति को अवार्ड देकर सम्मानित किया। समिति की ओर से अध्यक्ष ओ पी गुप्ता तथा मैनेजर प्रहलाद शर्मा ने पुरस्कार ग्रहण किया। इस मौके पर अलवर केन्द्रीय सहकारी बैंक के प्रबंध निदेशक बी राम भी उपस्थित थे।

गोदारा ने बताया कि नैफस्कॉब शीर्ष सहकारी बैंकों एवं जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के सुगम परिचालन तथा सहकारी साख के विकास के लिए कार्य करने वाली प्रमुख संस्था है। अलवर जिले की यह दूसरी संस्था है जिसको इस प्रकार का राष्ट्रीय स्तर का अवार्ड मिला है। उन्होंने बताया कि उत्कृष्ट कार्य करने वाली देश की सभी सहकारी संस्थाओं में से बहाला ग्राम सेवा सहकारी समिति को अवार्ड मिलना गर्व की बात है।

राजस्थान में कृषि फसलों उत्पादों के भंडारण के लिए नौ कोल्ड चैन प्रोजेक्ट स्वीकृत

जयपुर (कासं)। राजस्थान में कृषि उत्पादों/फसलों के दीर्घ समय तक खराब होने से बचाने के लिए केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा किसान, संपदा योजना के तहत नौ शीत श्रंखला परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है। यह जानकारी केन्द्रीय कृषि एवं कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह ने दी। सिंह ने बताया कि राजस्थान में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड और राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत फलों, सब्जियों, फूलों और मसालों जैसी जल्द खराब होने वाली कृषि फसलों के भंडारण के लिए पूर्व से ही कुल 106 शीतागार परियोजनाएं चलाई जा रही है। जिनकी कुल क्षमता 4,11,421 मिट्रिक टन है। सिंह ने बताया कि अभी तक फलों, सब्जियों और फूलों व मसालों जैसी कृषि फसलों के भंडार के लिए ही शीतागार भंडार बनाए जाते रहे हैं। परन्तु राजस्थान सहित देश में केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा स्वीकृत किए गए कुल 236 शीत श्रृंखला परियोजनाओं की स्थापना से अन्य कृषि उत्पादों के संरक्षण में मदद मिलेगी।

राज्य स्तरीय बुनकर पुरस्कार वितरित

राज्य में 27 हजार आर्टिजनों के कार्ड बनेंगे

जयपुर (कासं)। उद्योग भवन में आयोजित समारोह में सांसद रामचरण बोहरा और उद्योग आयुक्त कुंजी लाल मीणा ने राज्य स्तरीय बुनकर पुरस्कारों का वितरण किया। पुरस्कारों में पहला पुरस्कार बाड़मेर के गोविन्द को पद्म साड़ी, दूसरा पुरस्कार कोटा की श्रीमती वाहिदा को कोटा डोरिया, तीसरा पुरस्कार बीकानेर के मगन मेघवाल को परंपरागत खेस और सांत्वाना पुरस्कार सयुक्त रुप से जयपुर के टाडावास की सुगनी देवी को शर्टिंग और दौसा के सोनू गौतम को दरी के लिए प्रशस्ति पत्र देते हुए पुरस्कार राशि का डिजिटल भुगतान किया गया। इस अवसर पर सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंग्रेजों के खिलाफ 1905 में बंगाल से चलाए स्वदेशी आंदोलन की याद को चिरस्थाई और हथकरघा बुनकरों को नई पहचान देने के लिए पिछले तीन वर्षों से समूचे देश में हथकरघा दिवस के रुप में मनाने की पहल कर बुनकरों और उनके उत्पादों को नई दिशा और पहचान दी है। बोहरा उद्योग भवन में बुनकर सेवा केन्द्र जयपुर, उद्योग विभाग और केन्द्र सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा संयुक्त रुप से आयोजित तीसरे राष्ट्रीय हथकरघा दिवस और राज्य स्तरीय बुनकर पुरस्कार समारोह में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, मुद्रा योजना, स्टेण्ड अप, स्टार्ट अप व रोजगार सृजन योजना और डिजीटल इण्डिया की चर्चा की।

इस बार उड़द, मूंग, कपास, मूंगफली की बोआई ज्यादा

अलवर (विसं)। प्रदेश में अब तक खरीफ की 90 फीसदी से ज्यादा बोआई हो चुकी है। इस बार प्रदेश में उड़द, मूंग, मूंगफली एवं कपास की बोआई लक्ष्य से अधिक की गई है। उड़द की बोआई लक्ष्य से करीब दुगनी हुई है। वहीं अरहर की 65, सोयाबीन की 80 एवं ग्वार की 65 प्रतिशत बोआई हुई है। कृषि मुख्यालय के संयुक्त निदेशक (सांख्यिकी) एल.एन. बैरवा के अनुसार प्रदेश में इस बार 162 लाख 16 हजार हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बोआई का लक्ष्य तय किया है। इसके मुकाबले 7 अगस्त तक 144 लाख 84 हजार हेक्टेयर में बोआई हुई है। पिछले साल 7 अगस्त तक 124 लाख 66 हजार हैक्टेयर में खरीफ फसलों की बोआई की गई थी। प्रदेश में इस बार अब तक ज्वार, बाजरा, मक्का आदि मोटे अनाज की 94 प्रतिशत, मूंग, मोठ, उड़द, चौला आदि दलहन की 111प्रश., मूंगफली, सोयाबीन, अरंडी आदि तैलीय बीजों की 80ज एवं गन्ना, कपास ग्वार आदि फसलों की करीब 103 फीसदी बोआई की गई है।

वैज्ञानिक किसानों तक नई तकनीक पहुंचाएं : डॉ. चतुर्वेदी

जयपुर (कासं)। देशमें सरसों सहित अन्य तिलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नई तकनीक को अपनाने के साथ लागत कम करने पर ध्यान देना होगा। देश और विश्व में विकसित हो रही नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिकों को ही पहल करनी होगी, इसके लिए सरकारों के भरोसे रहें। यह कहना है भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) में सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. एस.के. चतुर्वेदी का। उन्होंने राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर में अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में कहा कि किसानों की आय को दुगुना करने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को ऐसी तकनीक का विकास करना होगा, जिसमें लागत कम आए और उत्पादन बढ़ सके। डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि सरसों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि इनके लिए जरूरी पोषक तत्वों की उपयोगिता को बढ़ाया जाए, यह वर्तमान की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इसके लिए मृदा जांच कराने के साथ उसमें वांछित पोषक तत्वों का इस्तेमाल किया जाए। वैज्ञानिकों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि उपलब्ध प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए ऐसी तकनीक का विकास होना चाहिए, जो जलवायु के अनुकूल हो और कारगर भी हो। उन्होंने नई तकनीक के विकास के लिए समन्वित पादप तकनीकों की आवश्यकता जताई। डॉ. चतुर्वेदी ने विशेष गुणों की किस्मों का विकास करने के साथ बायो टेक्नोलॉजी कार्यक्रम की प्राथमिकता को पुनर्निर्धारित करने पर जोर दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एस. राठौड़ ने कहा कि विश्व में राई-सरसों की उत्पादकता करीब 2 टन प्रति हैक्टेयर है, उसमें जर्मनी सबसे आगे है। भारत में यह 1.83 टन प्रति हैक्टेयर ही है। इसे बढ़ाने के लिए वैज्ञानिकों को स्थानीय जलवायु के अनुकूल अधिक उत्पादन वाली किस्मों को विकसित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राई-सरसों की उत्पादकता को मुख्य रूप से अनिश्चित वर्षा, पाला, उच्च तापमान, कीट और रोग प्रभावित करते हैं। इनसे बचाव के लिए समुचित रणनीति बनाई जानी चाहिए। डॉ. राठौड़ ने देश में खाद्य तेलों की जरूरत, उत्पादन और आयात को लेकर भी स्थिति की विवेचना की।

कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक (अनुसंधान) डॉ. वी.के. यादव, राजस्थान कृषि अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. एस.जे. सिंह ने अनुसंधान उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए विकास के सुझाव दिए।

सहकारी बैंकिंग प्रणाली से जुड़ेंगे महिला स्वयं सहायता समूह

जयपुर (कासं)। प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने कहा है कि राज्य के महिला स्वयं सहायता समूह के संगठनों को सहकारिता की बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा जाएगा ताकि महिलाओं को समय पर आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाकर उन्हे स्वावलंबी बनाया जा सके। महिला स्वयं सहायता समूहों के फैडरेशन को सहकारिता कानून के तहत महिला सहकारी समिति के रूप में रजिस्टर्ड किया जाएगा। प्रमुख शासन सचिव ने धौलपुर जिले में कार्य कर रहे महिला स्वयं सहायता समूहों की कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण लेकर लौटे विभाग के अधिकारियों एवं निरीक्षकों से संवाद किया एवं प्रशिक्षण के बारे में जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी अपने कार्यक्षेत्र में कार्य कर रहे महिला स्वयं सहायता समूह को आगे बढ़ाने में पूरी मदद करें एवं सहकारिता कानून के तहत ऐसे फैडरेशन को रजिस्टर्ड भी कराएं।

सेशल्स के प्रतिनिधिमंडल ने कृषि में किए जा रहे नवाचारों को सराहा

जयपुर (कासं)। रिपब्लिक ऑफ सेशल्स के 9 सदस्यीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने बस्सी स्थित कृषि और उद्यान विभाग के विभिन्न कृषि फार्मों का भ्रमण किया। उन्होंने यहां जैतून फार्म, जैतून नर्सरी, सेटर ऑफ एक्सीलेंस अनार और राजस्थान ऑलिव कल्टीवेशन लिमिटेड के फार्म को देखा। उल्लेखनीय है कि नेशनल असेम्बली ऑफ सेशल्स के स्पीकर पैट्रीक पिल्ले के नेतृत्व में 9 सदस्यीय सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल जयपुर यात्रा पर आया है। उन्होंने बस्सी में यहां बन रही विश्व की पहली प्रसंस्कृत जैतून की चाय इकाई को देखा। राजस्थान ऑलिव कल्टीवेशन लिमिटेड के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर योगेश वर्मा ने उन्हें इस इकाई की कार्यप्रणाली और राज्य में की जा रही जैतून की खेती के बारे में अवगत कराया। उन्होंने यहां बन रही जैतून की चाय का स्वाद भी चखा। इस प्रतिनिधिमंडल ने यहां अनार के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का भी भ्रमण किया। उद्यान विभाग के संयुक्त निदेशक भीमाराम ने जानकारी देते हुए कहा कि यहां अनार की चार प्रमुख किस्मों के मदर प्लांट तैयार किए गए हैं और यहां से अनुदानित दरों पर किसानों को पौधे वितरित किए जा रहे हैं। उन्होंने अनार प्रसंस्करण की छोटी इकाई का भी अवलोकन किया। प्रतिनिधिमंडल को देश की जैतून की सबसे बड़ी नर्सरी का भ्रमण कराया गया। उन्हें यहां हो रही ड्रैगन फ्रूट की खेती के बारे में भी जानकारी दी गई। उन्होंने मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में राजस्थान कृषि क्षेत्र में हो रहे नवाचारों भूरी-भूरी प्रशंसा की।

कौशल विकास में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए

राजस्थान को मिला गोल्डन अवार्ड

जयपुर (कासं)। केन्द्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजीव प्रताप रूडी ने नई दिल्ली के होटल ललित में आयोजित स्किल इंडिया समिट एवं अवार्ड समारोह में कौशल विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजस्थान को एसोचैम स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। यह पुरूस्कार राजस्थान के कौशल, नियोजन एवं उद्यमिता मंत्री डॉ.जसवंत सिंह यादव ने ग्रहण किया। पुरस्कार ग्रहण करने के बाद डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं में कौशल नियोजन एवं रोजगार को महत्वता प्रदान करने के उद्देश्य से राजस्थान में संचालित कौशल विकास कार्यक्रम देश भर में अव्वल है। पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने बेरोजगार युवाओं को रोजगार और कौशल विकास को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से इस क्षेत्र मे कई महत्वपूर्ण काम किये हैं। जिससे राजस्थान ने सफलता प्राप्त करते हुए लगातार तीसरी बार एसोचेम गोल्डन अवार्ड अपने नाम किया। राजस्थान में 'डीएसईई' निर्माण के बाद आईटीआई, रोजगार तथा आरएसएलडीसी में प्रभावी समन्वय बन गया है। युवाओं की रोजगार क्षमता को अर्न्तराष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के लिए विभाग ने कई कदम उठाये है। कौशल विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार द्वारा उठाया गया एक बड़ा कदम है एवं विभाग लगातार कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने की नई उँचाइयों को छूने हेतु प्रयासरत है।

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने स्वतंत्रता दिवस पर 69 प्रतिभाओं को सम्मानित किया।

सोयाबीन की फसल में बढ़ा इल्ली का प्रकोप

छोटीसादड़ी (विसं)। उपखंड मुख्यालय के उपखंड मुख्यालय के गांवों में इन दिनों मौसम खुलने के बाद फसलों में इल्ली का प्रकोप बढ़ गया है जिससे किसानों की चिंता बढ़ गई है एवं रासायनिक वह कीटनाशक दवाओं का स्प्रे मशीन से छिड़काव कर रहे हैं। गोठड़ा गांव के युवा किसान शिव लाल जणवा ने बताया कि क्षेत्र में अच्छी बरसात होने से सोयाबीन मक्का एवं अन्य फसलों में इल्ली एवं खरपतवार बढ जाने से फसलें पीली पड़कर पत्ते सुखकर नष्ट हो रहे है जिससे किसान विभिन्न प्रकार की रसायनिक एवं कीटनाशक दवाओं का स्प्रे मशीन से छिड़काव कर खरपतवार को नष्ट करने में जुटे हुए हैं।

टमाटर के हाइब्रिड बीजों से मिलेगा किसानों को अच्छा मुनाफा

जयपुर (कासं)। इस तेजी के दौर में अच्छा लाभ कमाने के इच्छुक किसान अगेती फसल के लिए हाइब्रिड किस्मों के बीजों का इस्तेमाल कर अपनी कमाई बढ़ा सकते हैं। राजस्थान उत्तर और पश्चिम भारत के बीच स्थित है। मौसम भौगोलिक स्थिति को देखते हुए राज्य को टमाटर उत्पादन के लिए आदर्श माना जाता है। किसान अगर हाइब्रिड बीजों का इस्तेमाल करे तो पौधों को जीवाणु कीटों के प्रकोप की चिंता नहीं रहेगी। इन बीजों से टमाटर के आकार और स्वाद भी लोगों की चाहत के अनुरूप होते हैं। ये टमाटर अपेक्षाकृत कठोर होते हैं।

टमाटर की ये हाइब्रिड किस्में

किसानों के लिए बाजार में सरकारी क्षेत्र के अलावा निजी कंपनियों के बीज भी प्रचलन में हैं। इनमें सेमिनिस के हाइब्रिड बीजों में अभिलाष, गर्व, टीओएस-369, एसवी 3466टीई, प्रसून, चिरौंजिवी, सिंधु, करिश्मा, गणेश, अभिरंग, आयुष्मान, अशोका अरिजित आदि किस्में काफी प्रचलित हैं। अन्य कंपनियों के बीजों में हिमशिखर, लक्ष्मी-5005, एआरएसटी-3, बीएसएस-408 जैसी किस्में भी काफी उन्नत अधिक उत्पादन वाली साबित हो रही हैं।

ऐसे करें बुआई : हाइब्रिड बीजों की बुआई के लिए किसानों को थोड़ी सावधानी रखनी होगी। इन बीजों के लिए अच्छी जुताई की हुई मिट्टी हो और इसमें टमाटर के लिए तय समय पर बीजारोपण किया जाए। इसके 20-25 दिनों के बाद इनकी पौध को बड़ी क्यारियों में रोपा जाए। इसमें कतार से कतार की दूरी 90 सेमी और पौध से पौध की दूरी 45 से 60 सेमी रखी जाए। इनमें कृषि विशेषज्ञों की राय के अनुसार उर्वरक अन्य दवाएं डाली जाएं।

आम लोगों की दैनिक जरूरत का हिस्सा बन चुके टमाटर की मांग लगातार बढ़ रही है। टमाटर की अगेती खेती के प्रति कम जागरुकता के कारण इन दिनों इसकी आवक कम और मांग ज्यादा हो रही है। इसी कारण टमाटर के भाव बढ़े हुए हैं।

Hindchem Corproation

SUPPER POTASSIUM HUMATE SHINY FLAKES

ZINK EDTA

SEAWEED EXTRACT FLACKES

N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER

AMINO ACID

AMINO+HUMIC SHINY BALLS
FERROUS SULPHATE19%
MAGNESIUM SULPHATE 9.6%
FERROUS EDTA12%
E.D.T.A. ACID
CAMPHOR
SODIUM BICARBONATE
EDTA DISODIUM
CITRIC ACID MONOHYDRATE
MANGANESE SULPHATE 30.5%
SULPHUR 90% -80WDG
BORON 20%
BRONOPOL 25%
PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry
Tel. 022-66998360/61
Fax-022-66450908
Email id: mamta@hindchem.com
Mo. 9004744077

बायोगैस स्लरी जैविक खाद उत्पादन तकनीक बताई

भीलवाड़ा (विसं)। भारत में इस साल 276 मिलियन टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ है जो रिकॉर्ड है। यह कृषि तकनीक के इस्तेमाल का ही नतीजा है। कृषि अवशेषों से बायोगैस स्लरी के रूप में जैविक खाद उत्पादन की तकनीक हमें प्रत्येक किसानों तक पहुंचानी होगी। भारत में बढ़ते ऊर्जा संकट का यही समाधान हो सकता है। यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली उप महानिदेशक (उच्च शिक्षा) डॉ. एनएस राठौड़ ने कही। वे यहां बारानी कृषि अनुसंधान केंद्र में कृषि अवशिष्ट पदार्थों के अवायवीय अपघटन से बायो-सीएनजी तथा जैविक खाद उत्पादन के विषयक ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण को संबोधित कर रहे थे। 7 प्रदेशों से आए 25 कृषि वैज्ञानिक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद प्रायोजित 21 दिवसीय प्रशिक्षण ले रहे हैं। परंपरागत ऊर्जा स्त्रोत वर्षाजल प्रबंधन पर डॉ. राठौड़ ने प्रशिक्षणार्थियों से कृषि अवशिष्ट पदार्थों से बायोगैस तथा बायो सीएनजी के रूप में ऊर्जा उत्पादन को आज की आवश्यकता बताया। डॉ. राठौड़ ने प्रत्येक वैज्ञानिक से इस प्रशिक्षण से लौटकर तकनीक को और उन्नत बनाने के लिए नए-नए अनुसंधान करने की सलाह दी। बायोगैस स्लरी को भी पोषक तत्वों से सांद्र कर मृदा उर्वरता बढ़ाने का आह्वान किया। इससे पहले केंद्र के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अनिल कोठारी ने डॉ. राठौड़ का स्वागत किया। सदन के समक्ष बारानी कृषि अनुसंधान केंद्र की गतिविधियों का ब्यौरा रखा।

अच्छी फसल का आधार -मिट्टी का सुधार

हमारी प्राकृतिक सम्पदा में मिट्टी का महत्व सबसे अधिक है और शायद हम मिट्टी के स्वास्थ्य की कद्र नहीं कर मिट्टी की ही सबसे ज्यादा मिट्टी कर रहे हैं। उपजाऊ मिट्टी की ऊपरी परत बनने में तीन हजार साल से लेकर 12 हजार साल तक लग जाते हैं और मिट्टी खराब हो जाती है तो उसे सुधारने में अत्यधिक जोर आता है। विकासशील देशों में मिट्टी की बर्बादी पर विश्व खाद्य संगठन ने चिंता जाहिर करते हुए कहा है कि अगर इसी तरह से मिट्टी की बर्बादी होती रही तो विकासशील देशों की उत्पादन क्षमता में 20 प्रतिशत तक कमी आ सकती है। अत: खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से हमें भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखना है।

मिट्टी के हालात नाजुक: प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में गठित टास्क फोर्स की रिपोर्ट के अनुसार उर्वरा शक्ति की दृष्टि से 75: भूमि का स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ है। मिट्टी में आर्गेनिक कार्बन की 82प्रश. की कमी होकर आर्गेनिक कार्बन की मात्रा न्यून श्रेणी (0.5 प्रतिशत) में है। आर्गेनिक मात्रा की कमी के कारण भूमि में नत्रजन की मात्रा में 90 प्रतिशत तक की कमी आ गई है जिसकी पूर्ति के लिए रासायनिक खाद यूरिया का अंधाधुंध उपयोग करने एवं फसलों की सघनता बढ़ने के कारण मौलिक उर्वरा शक्ति घटने के साथ ही भूमि की भौतिक संरचना भी बिगड़ रही है। इससे जमीन कठोर और क्षारीय बन रही है। फास्फोरस की भी 64प्रश. तक कमी हो गई है। राइजोबियम, एजेटोबेक्टर, ट्राइकोडर्मा जैसे मित्र जीवाणुओं की संख्या घट रही है जो भविष्य में अत्यन्त नुकसानदेह है। भूमि में गिरावट आदि का प्रमुख कारण पोशक तत्वों के अलावा भूमि में गौण व सूक्ष्म तत्वों की कमी दिनों दिन बढ़ती जा रही है। जैसे गंधक, जस्ता, लोहा, तांबा, मैग्नीज आदि।

कैसे सुधारें मृदा स्वास्थ्य: भूमि की उर्वरा शक्ति मुख्यत: भूमि की ऊपरी परत से लेकर भूमि की 6-7 सेंटीमीटर (ढ़ाई-तीन इंच) नीचे तक ही पाई जाती है। इसके नीचे की मिट्टी पानी को धारित करती है। किसान जुताई इसी ऊपरी उपजाऊ परत को ढ़ीला करने के लिए करते हैं। यदि मिट्टी की इस ऊपरी परत के बचाव के लिए किसान खेत के चारों ओर मेड़ नहीं बनाए तो वर्षा पानी से ये जुती हुई मिट्टी बह सकती है तथा इस प्रकार यह जरूरी है कि टिकाऊ एवं सतत् उत्पादन के लिए भूमि के कटाव व क्षरण को रोका जाए। इस प्रकार भू संरक्षण एवं पानी संरक्षण दोनों आवश्यक हैं। अन्य उपायों में भूमि में मित्र जीवाणुओं की वृद्धि करना, उचित नमी बनाए रखना, मिश्रित फसलें बोना, हरी खाद गोबर की खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, खाद देना, संरक्षण हेतु पलवार बिछाना, जिप्सम, सार्वजनिक एवं निजी भूमियों में जल ग्रहण प्रवृत्ति बढ़ाना, चैकडेम बनाना आदि महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार अवशेषों को खेत में जलाने की बजाय उसे भूमि में मिला देना अच्छा रहता है। वर्षा ऋतु में उपलब्ध घासफूस (खरपतवार) से कम्पोस्ट खाद बनाकर खेतों में डालना चाहिए। इस प्रकार एकीकृत उपायों को अपनाकर भूमि की उपजाऊ शक्ति को मजबूत करना चाहिए।

भूमि सुधार के कुछ महत्वपूर्ण उपाय: मिट्टी परीक्षण क्यों एवं कैसे-अगर कोई व्यक्ति अपने आप को बीमार महसूस करता है तो बीमारी का कारण क्या है तथा उसकी सही दवा क्या हो इसे जानने के लिए उसे डाक्टर के पास जाना पड़ता है। डाक्टर बुखार नापने के लिए थर्मामीटर से ताप नापकर पता लगाता है कि बुखार मामूली है या ज्यादा। इसी प्रकार खून जाँच कर खून की कमी का पता लगाता है। मलेरिया के लिए भी रक्त जाँच की जाती है। बीमार आदमी बोलकर कुछ पीड़ा के लक्षण तो बता सकता है लेकिन खेत की मिट्टी अपने बारे में बोलकर नहीं कह सकती कि उसमें कितने पोषक तत्वों की कितनी मात्रा मौजूद है एवं कितनी किस फसल के लिए और चाहिए। इस प्रकार किसी भी फसल के पौधों को अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए कई पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिनके अभाव में पौधे अपना जीवन चक्र सफलतापूर्वक पूर्ण नहीं कर पाते। प्राय: पोषक तत्वों की कमी भूमि में धीरे-धीरे पनपती है और पौधों पर जब पोषक तत्वों की कमी के चिन्ह प्रकट होने लगते हैं तब तक काफी देर हो चुकी होती है और फसल की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। अत: खेत की मिट्टी की उपजाऊ शक्ति का सही आंकलन करवाना आवश्यक है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि निरन्तर अच्छी पैदावार पाने के लिए खेत में कौन-कौन सी खाद व उर्वरक कितनी मात्रा में डालें। ऐसा मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही संभव है।

बिना मिट्टी जाँच कराए उर्वरक डालेंगे तो क्या नुकसान होंगे

- जरूरत से कम उर्वरक डालने से पैदावार कम।
- जरूरत से ज्यादा उर्वरक डालने से धन की हानि एवं फसल को नुकसान
- मिट्टी खराब होना।
- नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश (एनपीके) का वास्तविक अनुपात 3: 2: 1 है जो यह प्रदर्शित करता है कि पोटाश की तुलना में नत्रजन व फास्फोरस का अत्यधिक उपयोग हो रहा है। इससे भूमि में पोशक तत्व होते हुए भी पौधों को नहीं मिलते हैं। इसलिए मिट्टी की जाँच करवाकर ही उर्वरकों का प्रयोग करें।

मिट्टी परीक्षण के उद्देश्य

- मिट्टी की उर्वरा शक्ति की जाँच करके एवं किस्म विशेष के लिये पोशक तत्वों की संतुलित मात्रा की सिफारिश करना।
- मिट्टी में लवणता, क्षारीयता तथा अम्लीयता की पहचान एवं जांच के आधार पर भूमि सुधारकों की मात्रा एवं प्रकार की सिफारिश करना।
- मिट्टी के भौतिक एवं रासायनिक गुणों की जाँच कर गुणों के अनुसार उपयुक्त फसलों व फसल किस्मों की सिफारिश करना।
- फलों के बाग लगाने के लिये भूमि की उपयुक्तता का पता लगाना।

मिट्टी का नमूना लेने एवं परीक्षण के चरण

- मिट्टी के नमूनों को एकत्र करना।
- नमूनों को तैयार करना।
- मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं में मिट्टी परीक्षण करना।
- मिट्टी परीक्षण के नतीजों के आधार पर उर्वरक संस्तुति करना।

सामान जो चाहिए नमूना लेने के लिए

मिट्टी का नमूना लेने लिए खुरपी, फावड़ा, बाल्टी, ट्रे या प्लास्टिक का टब, कपड़े एवं प्लास्टिक की थैली, पेन, धागा, नमूना पत्रक इत्यादि की आवश्यकता होती है जो किसी भी किसान के पास उपलब्ध होता है। नमूना लेने के लिए सभी सामान साफहोने चाहिये। जिससे मिट्टी दूशित न हो।

फसल उत्पादन के लिए नमूना लेने का सही तरीका

- नमूना ऐसी जगह से लिया जाये कि उन मिट्टियों का वास्तविक प्रतिनिधित्व कर सके। खेत को उसकी स्थिति (समतल, ऊँची, नीची, ढ़लान) एवं मिट्टी की किस्म के अनुसार बांट लेते हैं।
- नमूना लेने के लिए लगभग एक हैक्टर क्षेत्र से 15-20 स्थानों का चयन करते हैं।
- नमूना लेने वाले स्थान से घास-फूस इत्यादि साफ कर लेते हैं। खुरपी या फावड़े की सहायता से लगभग 15 से.मी. गहरा अंग्रेजी के V आकार का गड्ढा खोदकर किसी भी तरफसे पूरी गहराई तक की मिट्टी की एक समान परत काटकर किसी साफबाल्टी में एकत्र कर लेते हैं।
- एकत्रित नमूनों को आपस में अच्छी प्रकार से मिला लें एवं छाया में सुखायें। सुखाने के बाद नमूनों के ढ़ेलों को फोड़कर बारीक बनाकर खरपतवार, पौधों की जड़ें, कंकड़, पत्थर आदि को निकालकर फेंक दें। मिलाई हुई मिट्टी को चार भागों में बांटकर आमने-सामने की दो भागों की मिट्टी को रखकर बाकी फैंक दें। रखे हुए दो भागों की मिट्टी को अच्छी तरह मिला लें और पूर्ववत फेला कर चार बराबर भागों में बांट लें। पहले की तरह दो भाग की मिट्टी रख कर दो भाग फेंक दें। यह क्रिया तब तक जारी रखें जब तक मिट्टी का कुल नमूना लगभग 500 ग्राम न रह जाए। वास्तव में इस तरह इकट्ठा किया गया मिट्टी का नमूना ही प्रतिनिधि नमूना कहलाता है।
- आधा किलो मिट्टी को किसी साफ पॉलिथीन या कपड़े की थैली में भरकर उसमें पहचान के लिए सूचना पत्रक को अन्दर डालकर प्रयोगशाला में भेज दे। सूचना पत्रक में किसान का नाम एवं पूरा पता, खेत की पहचान, नमूना लेने की तिथि, जमीन का ढ़लान, सिंचाई का उपलब्ध स्रेत, पानी निकास, आगामी फसल का नाम, पिछले तीन साल की फसलों का ब्यौरा एवं कोई अन्य समस्या आदि का विवरण लिखें। कपड़े की थैली में अन्दर या बाहर सूचना पत्रक रखकर इसका मुँह बांधकर अपनी नजदीकी मृदा परीक्षण प्रयोगपाला में परीक्षण हेतु भेज देवें।

लवणीय मिट्टी का नमूना लेना: खेत या क्षेत्र, जहां भूमि लवणों से प्रभावित हो, उसमें 10 सेमी. (लगभग 4 इंच) गहरा गड्ढा खोदें ओर एक तरफ की सतह एक सार कर लें। इस एकसार सतह पर 16,30,60 और 100 मी. गहराई पर निशान लगा दें।

- एक छोटी प्लास्टिक की बाल्टी या कोई दूसरा बर्तन 15 सेमी. के निशान पर रखें और ऊपरी सतह से 15 सेमी. तक बराबर मोटाई की परत खुरच कर बाल्टी में डाल दें, जब लगभग आधा किलो मिट्टी हो जाये तो उसे एक साफ थैली में डालकर इस पर नमूना क्रमांक व 0-15 सेमी. लिख देवें।
- इसी तरह से 15-30, 30-60, 60-90 सेमी. की परतों से नमूना लेकर तीन अलग-अलग थेलियों में डालकर परतों की गहराई लिख देवें।
- सतह पर पड़े लवणों का अलग नमूना लें एवं उसकी औसतन गहराई लिख दें।

फलदार पौधे लगाने वाली भूमि के नमूने लेना

ऊपरी सतह के साथ-साथ नीचे की मिट्टी के नमूने लेने की विधि निम्न प्रकार है-

- लगभग 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदकर इसकी एक तरफकी दीवार को **(शेष पेज 7 पर)**

साफएवं समतल कर लें तथा इस पर 15, 30, 60, 120, 150, एवं 180 सेमी की गहराई पर अलग-अलग निशान लगा दें।

- प्रत्येक परत (0-15, 15-30, 30-60, 60-90, 90-120, 120-150 तथा 150-180 सेमी.) से उसी तरह से आधा किलो मिट्टी का नमूना लें जिस तरह लवण प्रभावित भूमि में नमूना लेने की विधि में बताया गया है।
- मिट्टी का नमूना लेते समय जमीन में पाई जाने वाली कंकर की तह की गहराई व मोटाई अवश्य लिखें एवं इसका नमूना अलग से लें।
- इन नमूनों को अलग-अलग कपड़े की थैलियों में डालकर प्रत्येक थैली पर नमूना क्रमांक व गहराई अवश्य लिखें तथा सूचना पत्रक डालकर मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें।

क्या सावधानियाँ बरतें ?

- खाद के ढ़ेर, खेत की मेड़ या सिंचाई नाली के नजदीक से नमूना नहीं लें।
- खेत में उगे किसी पेड़ के जड़ वाले क्षेत्र से नमूना नहीं लें। अधिकतर समय जहाँ पानी भरा रहे वहां से भी नमूना नहीं लें।
- उस स्थान से नमूना न लें जहां पर खाद, उर्वरक, चूना, जिप्सम या कोई अन्य भूमि सुधारक रसायन तत्काल डाला गया है।
- ऊसर आदि की समस्या से ग्रस्त खेत या उसके किसी भाग का नमूना अलग से लें
- जहाँ तक संभव हो गीली मिट्टी का नमूना न लें, अन्यथा उसे छाया में सुखाकर ही प्रयोगशाला को भेजें।
- नमूनों को खाद के बोरों, ट्रैक्टर आदि की बैटरी या अन्य किसी रसायन आदि से दूर रखें ।
- खड़ी फसल में नमूने नहीं लेने चाहिए।

सामान्यत: कम से कम तीन वर्ष में एक बार मिट्टी परीक्षण जरूर करावें। नमूने रबी की बुआई से पहले एवं खरीफकी बुआई से पहले परीक्षण कराना चाहिए। वैसे तो खरीफ में ग्वार व दलहनी फसलें (लेग्यूम) नाइट्रोजन पैदा करती है तो रबी से पहले नमूना जांच कराने पर हमें पता लग जाता है कि भूमि में नाइट्रोजन कितना है तो उसी अनुसार रबी में शेष नाइट्रोजन मात्रा ही देनी होगी। यह एक उदाहरण इसे समझने के लिए पर्याप्त है कि रबी से पूर्व व खरीफ से पूर्व मिट्टी परीक्षण की क्या उपयोगिता है।

बैंगन के कीट एवं व्याधियों का समन्वित प्रबंधन

तेजपाल बाज्या, ममता बाज्या एवं ममता देवी चौधरी
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर (जयपुर)-303329

बैंगन को आम लोगों की सब्जी कहा जाता हैं। पूरे साल व देश के लगभग सभी भागों में बहुतायत से उगाये जाने वाली फसल हैं। यह पोषकीय एवं औषधीय गुणों से भरपूर सब्जी हैं, जिसका उदर विकारों एवं दर्द आदि में चिकित्सकीय उपयोग हैं। एक एक अच्छी पैदावार व अधिक आमदनी देने वाली फसल है, परन्तु इसे कई रोग एवं कीड़े प्रभावित करते हैं, जिसके कारण फल बैचेन की दृष्टि से अनुपयुक्त हो जाते हैं। अत: समय रहते इन्हें नियंत्रित कर अधिक उत्पादन व आय अर्जित कर सकते है।

तना एवं फल बेदक कीट: यह बैंगन का सबसे खतरनाक कीड़ा हैं, जो बहुत अधिक हानि पहुंचाता हैं। इसकी लटें कोमल टहनियों व तनों में छेद करके सुरंग बनाती हुई अन्दर घुस जाती हैं, जिससे ऊपर की टहनियां/कोपलें मुरझाकर लटक जाती हैं तथा पौधों की बढ़वार रूक जाती हैं। सुन्डी फलों में छेद करके उन्हें कांणे कर देती हैं, जिससे उनका बाजार भाव नहीं मिल पाता है। वर्षा तथा बसन्त ऋतु में इसका प्रकोप अधिक होता हैं, जिससे कभी-कभी पूरी फसल नष्ट हो जाती हैं।

नियंत्रण के उपाय: ग्रसित शाखाओं/कोपलों तथा फलों के अन्दर सूंडियां रहती है, जिनको तोड़कर नष्ट कर दें। ट्राइकोग्रामा मित्र कीट के 50,000 अण्डे (2.5 ट्राइको कार्ड) प्रति हैक्टेयर 45 दिन की फसल से 6 बार एक सप्ताह के अन्तराल पर खेत में छोड़ें। खड़ी फसल में छिड़काव हेतु एण्डोसल्फॉन-35 ई.सी. 2 मिली या मैलाथियॉन 50 ई.सी. 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोल कर 10-12 दिन के अन्तराल पर छिड़कें।

अंगमारी एवं फल सड़न रोग: पत्तियों पर धूसर या भूरे रंग के धब्बे तथा धब्बों के बीच का हिस्सा हल्के रंग का होना इसकी मुख्य पहचान हैं। फलों पर गड्ढेदार धब्बे बन जाते हैं तथा अन्दर का भाग सड़ जाता हैं।

नियंत्रण के उपाय: फसल चक्र अपनायें तथा एक खेत में तीन साल से अधिक फसल नहीं लें। फसल के पूर्व अवशेषों (ठूंठों) को एकत्र कर जला दें। यदि खुद की बीज काम लेना हो तो स्वस्थ, रोगरहित तथा बिना दाग वाले फलों से ही बीज लेकर उगावें। बीजों को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। रोग दिखने पर 2.5 ग्राम डायफेलाटन या जाइनेब या ब्लाइटोक्स- 50 या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-12 दिन पर छिडकें।

छोटी पत्ति रोग- रोग ग्रस्त पत्तियों छोटी, चिकनी, मुलायम व पीली दिखाई देती हैं तथा पूरा पौधा झाड़ीनुमा पीलापन लिए दिखाई देता है।

नियंत्रण के उपाय: रोगी पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें, खुले में न फैंके। नर्सरी में पौधों को रोग ग्रसित होने से बचाने हेतु 40 मैश या इससे छोटे छिद्र वाली एग्रोनेट जाली से ढ़क कर रखें। मिथाईल डेमेटोन 25 ई.सी. (फल बनने से पहले) तथा मैलाथियॉन (फल आने पर) 1.5 से 2.0 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। टेट्रासाइक्लिन या क्लोरामफेनिकॉल 100 पी.पी.एम. (एक ग्राम दवा 10 लीटर पानी में) घोल कर छिड़कें। रोगरोधी किस्में जैसे- पंत रितुराज, ठठ.7ए अर्काशील, एस-16, ए.बी.-2 आदि को अपनावें।

जड़ गाँठ रोग: रोगी पौधे छोटे एवं मुरझाये हुए, पत्तियाँ हल्के हरे से पीले रंग की तथा झुकी हुई सी दिखाई देती है। रोगी पौधों में फूल व फल नहीं के बराबर बनते हैं रोगी पौधों को उखाड़कर देखने पर जड़ों पर गाँठें तथा जड़ें फूली हुई नजर आती हैं।

नियंत्रण के उपाय: फसल चक्र अपनाएं, जिसमें टमाटर, मिर्च, बैंगन आदि शामिल न हो। गर्मियों में खेत की 2-3 गहरी जुताई करें। क्योंकि रोग का आक्रमण नर्सरी से ही शुरू हो जाता हैं, अत: पौध करने की जगह आधा से एक फुट ऊंचा कचरे का ढेर लगाकर जलावें। पौध क्यारियों में कार्बोफ्यूरान 3 जी 10 ग्राम प्रति वर्गमीटर में मिलावें। खेत में पौधे लगाने से पहले कार्बोफ्यूरान 3 जी 25-30 किलोग्राम/हैक्टेयर की दर से मिलावें। यदि कार्बोफ्यूरान खेत में नहीं डाली गई हो तो इसी दवा की एक-एक चुटकी, पौध लगा रहे स्थान पर गड्ढें में डालें।

कीटनाशियों की छिड़काव करते समय सावधानियां: छिड़काव सांयकाल के समय करें क्योंकि इस समय मधुमक्खियों तथा अन्य पर परागण करने वाले कीटों की संख्या फसल पर कम होती है। साग-सब्जी के लिए डण्टल एवं टहनियों कीटनाशियों के छिड़काव करने से पहले तोड़ें। कीटनाशियों के छिड़काव के बाद सात दिन तक इन्तजार करें, इस बीच डण्टल साग-सब्जी के लिए न तोड़े। इसके बाद फल को 3-4 बार साफ पानी से अच्छी तरह धोकर ही साग-सब्जी के लिए इस्तेमाल करें। ऐसा करने से जहरीले अवशेषों की मात्रा कम हो जाती है।

स्पिनफैड के श्रमिकों को ले-ऑफ वेजेज के रूप में दिए जाएंगे 5.07 करोड़ रुपये: किलक

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि स्पिनफैड की बन्द इकाइयों गुलाबपुरा, गंगापुर एवं हनुमान गढ़ के लगभग एक हजार श्रमिकों को ले-ऑफ वेजेज का भुगतान सितम्बर, 2016 से किया जाएगा और इसके लिए आज 5.07 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत कर दी गई है और एक सप्ताह में सभी श्रमिकों को भुगतान कर दिया जाएगा। किलक ने बताया कि इन श्रमिकों की मांग थी कि उन्हें ले-ऑफ वेजेज का भुगतान किया जाए। राज्य सरकार ने श्रमिकों एवं उनके परिवारों के भरण पोषण एवं हित में निर्णय लेते हुए यह राशि स्वीकृत कर दी है। उन्होंने बताया कि फैडरेशन के 1099 श्रमिकों एवं 45 स्टाफ कर्मचारियों के आवेदन पर स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति दी गई है जिसके लिए 52.56 करोड़ रुपये का भुगतान स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेने वाले सभी श्रमिक एवं कर्मचारियों को कर दिया गया है। फैडरेशन के शेष रहे योग्यताधारी 689 श्रमिकों को शिक्षा विभाग में अंतरिम व्यवस्था के लिए 6 माह तक विपरित प्रतिनियुक्ति के लिए लगाने हेतु वित्त विभाग ने स्वीकृति जारी कर दी है और शीघ्र ही शिक्षा विभाग से आदेश जारी होंगे। 6 माह के दौरान शिक्षा विभाग में विपरित प्रतिनियुक्ति पर लगे श्रमिकों को सहकारी संस्थाओं, निगमों, पंचायती राज संस्थाओं एवं स्वायत्तशासी संस्थाओं में रिक्त पदों पर प्रतिनियुक्ति कर समायोजन किया जाएगा। 689 श्रमिकों में से 219 श्रमिकों एवं 63 स्टाफ कर्मचारियों को सहकारी संस्थाओं में प्रतिनियुक्त करने के लिए आदेश जारी कर दिए हैं और उसके बाद में इनका समायोजन संबंधित संस्थाओं में कर दिया जाएगा।

कृषि सलाह किसान भाई ध्यान देवें

मध्यकालीन फूल गोभी: मध्यकालीन फूल गोभी की पौध तैयार करने का यह उचित समय है। इम्प्रूव्ड जापानीज, पूसा हाईब्रिड-2 एवं पूसा हिम ज्योति मध्यकालीन फूल गोभी की उन्नत किस्में हैं । इसकी एक हैक्टेयर क्षेत्र के लिये पौध तैयार करने हेतु 375 से 400 ग्राम बीज प्रयोग में लेवे ।

मूंग: मूंग की फसल में पत्ती भछक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर मैलाथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भूरकाव करें । भूरकाव मौसम के खुलने एवं नमी में कमी होने पर ही करें ।

खरीफ की सभी फसल: सफेद लट रोकथाम के लिए क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 4 लीटर या इमिडाक्लोपरिड 200 एस.एल. 300 मिलीलीटर प्रति हैक्टर की दर से 80 - 100 किलोग्राम मिट्टी में मिलाकर पौधों की कतारों में वर्षा वाले दिन भुरक देवे अथवा सिंचाई करें ।

करेला, तुरई, टिण्डा, ककडी, बैंगन एवं टमाटर: करेला, तुरई, टिण्डा, ककड़ी, बैंगन एवं टमाटर में फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रभावित फलों को तोड़कर भूमि में गाड़ कर नष्ट कर देवें तथा मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें तथा कम से कम 3 दिन तक फल खाने के प्रयोग में नहीं लेवें ।

पपीता: पपीते की पौध की रोपाई करने का यह उचित समय है । गड्ढे में रोपाई के पूर्व 10 कि. ग्रा. अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद, 300 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 50 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिला देवे । स्वस्थ एवं ओजस्वी पौधे काम में लेवें ।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : .....

संस्था का नाम : .....

पूरा पता : .....

ग्राम : .....तहसील .....

जिला ..... राज्य ..... पिन कोड

दूरभाष कार्य : ..... निवास .....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 ☐ तीन वर्ष 351 ☐ पांच वर्ष 501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में .....

बैंक का नाम ..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक ..... दिनांक .....

स्थान ..... प्रतिनिधि का नाम ..... हस्ताक्षर सदस्य .....

दिनांक .....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर

एवं संस्था सील

राष्ट्रीय कृषि बाजार के माध्यम से किसानों को मिलेगा उपज का उचित मूल्य :सैनी

राज्य में ई -नाम को 25 मंडियों में शुरु किया जा चुका है शेष मंडियों को राजस्थान इंटीग्रेटेड मंडी मैनेजमेंट से जोड़ दिया गया है। राज्य की सभी मंडियों को वाईफाई से भी जोड़ा जा रहा है। कृषि मंत्री, प्रभुलाल सैनी

जयपुर (कासं)। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि ई-राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई -नाम)के माध्यम से किसानों की उपज का उचित मूल्य मिल पाएगा तथा व्यापार में पारदर्शिता बढ़ेगी। सैनी पंत कृषि भवन में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय कृषि विपणन कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विजन है कि 'एक देश- एक मंडी' बनें। इसी अवधारणा के लिए ई-नाम का कॉन्सेप्ट लाया गया है जिससे पूरा देश एक बाजार बन सकें तथा किसानों को फसलों का उचित लागत बाजार के माध्यम से मिल सकें। सैनी ने कहा कि राज्य में ई -नाम को 25 मंडियों में शुरु किया जा चुका है शेष मंडियों को राजस्थान इंटीग्रेटेड मंडी मैनेजमेंट से जोड़ दिया गया है। उन्होने कहा कि राज्य की सभी मंडियों को वाईफाई से भी जोड़ा जा रहा है। उन्होंने व्यापारियों को आश्वस्त किया कि ई- नाम के शुरू होने से आडतियों को किसी भी तरह का नुकसान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि राज्य में ई- नाम को मजबूती से लागू किया जाएगा। इससे व्यापारियों और किसानों को समान रूप से लाभ होगा।

कृषि मंत्री ने कहा कि ई- नाम के माध्यम से कृषि में ई ट्रेडिंग, ई मार्केटिंग, ई- ऑक्शन सहित विभिन्न नवाचारों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि ई- नाम से व्यापारियों को किसी भी तरह की समस्या आएगी तो राज्य सरकार सभी समस्याओं का हल करेगी। इसके माध्यम से एक मंडी दूसरी मंडी से जुड़ेगी, जिससे उसे सही भाव मिल सकेंगे और व्यापारी भी देश की किसी भी मंडी जिंसों का क्रय कर सकेंगे।

इस अवसर पर कृषि विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती नीलकमल दरबारी ने कहा कि किसी भी अर्थव्यवस्था में किसान महत्वपूर्ण कड़ी निभाते है तथा वर्तमान के सूचना क्रांति युग में किसानों का तकनीक से जोड़ा जाना जरुरी है। उन्होंने कहा कि ई नाम से शुरूआत से व्यापारियों को शुरूआत में जो भी समस्या रहेगी वह सरकार द्वारा समय समय पर संवाद के माध्यम से हल करने का प्रयास किया जाएगा। कार्यशाला में निदेशक, कृषि विपणन नन्दमूल पहाड़िया ने कहा कि वर्तमान का युग तकनीक का है ऐसे में सभी को तकनीक को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों को ई- नाम के माध्यम से फसलों की लागत की सही कीमत मिलेगी।

मुख्यमंत्री को स्किल डवलपमेंट की गोल्ड ट्रॉफी भेंट

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे की पहल और प्रयासों से कौशल विकास एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में राजस्थान लगातार तीसरे वर्ष देश में प्रथम स्थान पर रहा है। नई दिल्ली में स्किल इंडिया समिट एवं अवार्ड समारोह में राज्य को एक बार फिर एसोचेम गोल्डन अवार्ड प्रदान किया गया, जिसे कौशल, नियोजन एवं उद्यमिता विभाग के मंत्री जसवन्त सिंह यादव और अधिकारियों ने मुख्यमंत्री कार्यालय में मुख्यमंत्री को भेंट किया। राजस्थान में संचालित कौशल विकास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को देश भर में सराहा जा रहा है। राज्य को लगातार तीसरी बार यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलना इस बात का प्रमाण है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी कौशल नियोजन के क्षेत्र में प्रदेश का शीर्ष स्थान बरकरार रहेगा।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

N.P.K. 100%WATER SOLUBLE FERTILIZER
- 19.19.19.
- 13.0.45(POTASSIUM NITRATE)
- 12.61.00 (MAP)
- 0.50.34 (MKP)
- 0.0.50 (SOP)
- CALCIUM NITRATE
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- ZINC SULPHATE 33%
- FERROUS EDTA 12%
- ZINC 21%
- FERROUS 19%
- MAGNESIUM
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

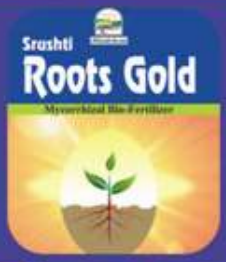

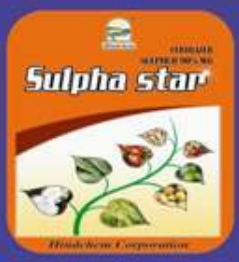

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOTOBACTOR
- RHIZOBIUM
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

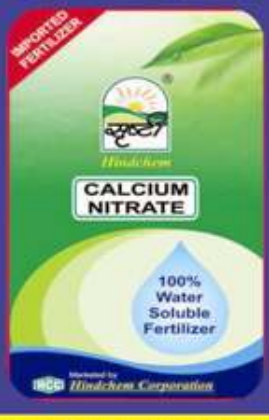

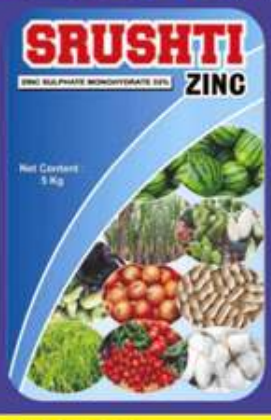

WELCOME INQUIRY Contact : 7728897567

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com